भागवत में सभी दिव्य रसों के रससमूह के सर्वोत्तम रस का वर्णन किया है जिसे महारास कहते है।

ईशवरीय क्षेत्र में अनंत मात्रा का पराकाष्ठा का आनंद तो निर्गुण निराकार में ब्रम्हलीन परमहंसों को ही मिल जाता है। इसके आगे सगुण साकार भगवान का अनंत मात्रा का आनंद है जिसमें रस की गुणवत्ता विशेष होती है। सगुण साकार भगवान की उपासना पाँच भावों से की जाती है जिसमें उत्तरोत्तर रसवृद्धी होती है वे है- शांत भाव -भगवान हमारे राजा हम उनकी प्रजा, दास्य भाव -भगवान हमारे स्वामी हम उनके दास, सख्य भाव -भगवान हमारे सखा हम उनके सखा , वात्सल्य भाव-भगवान हमारा पुत्र हम उनकी माँ या पिता, माधुर्य भाव-भगवान हमारे प्रियतम हम उनकी प्रेयसी।

शांत भाव रसिकों को मान्य नही है क्येंकि राजा प्रजा का नाता बहुत दूरी का है। ये योगीओं का भाव जो परमात्मा का ध्यान करते है तथा अंत में वैकुंठ लोक में चार भुजा वाले भगवान विष्णु के कवल दर्शनमात्र का सुख अनंत काल तक प्राप्त करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दास्य भाव का सुख हनुमान जी का है जिसमें स्वामी के सेवा का रस मिलता है। सख्य भाव में सखा लोग भगवान के साथ खेलने का, एकसाथ खाना खाने का आदि मैत्री का रस प्राप्त करते है। वात्सल्य भाव यशोदा मैय्या का है जो भगवान को उखल में बांधकर पतले दंडे से डराती है तथा उनकी बाल लीलाओं का रस प्राप्त करती है। माधुर्य भाव प्रियतम प्रेयसी का रस है। इसमें भी तीन कक्षाएँ है। साधारणी रति अपने विषय सुख के लिए श्रीकृष्ण से प्यार करती है जैसे कुब्जा। समंजसा रति कुछ श्रीकृष्ण के सुख के लिए तो कुछ अपने सुख के लिए प्यार करती है जैसे द्वारिका में श्रीकृष्ण की रानीयाँ। समर्था रति केवल श्रीकृष्ण के सुख के लिए ही प्यार करती है जैसे ब्रज की गोपियाँ।

केवल समर्था रति की ब्रज गोपियों को ही महारास का रस मिला।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132